

मटर की फसल में लगने प्रमुख रोग व कीट

कृषि कुंभ (अक्टूबर, 2023),
खण्ड 03 भाग 05, पृष्ठ संख्या 50-52

जानिए मटर की फसल में लगने प्रमुख रोग व कीट एवं उनका प्रबंधन



'श्याम नारायण पटेल'¹, डॉ. रमेश चन्द² एवं विश्व विजय रघुवंशी³

¹शोध छात्र (पादप रोग विज्ञान), ²शोध छात्र (पादप रोग विज्ञान),

³सह-प्राध्यापक (पादप रोग विज्ञान),

आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या (उ०प्र०) भारत।

Email Id: patelshyamnarain@gmail.com

परिचय :

मटर, जिन्हें अंग्रेजी में "पी" कहा जाता है, पौष्टिक और स्वादिष्ट फलीहारी फसलों में से एक है। यह एक पौधे की फली होती है जिसकी बीजों की संरचना गोल होती है और जिसे हम सब्जी और दाल के रूप में खाते हैं। मटर का उपयोग विभिन्न प्रकार की व्यंजनों में, आचारों में, और कई प्रकार की सांची में किया जाता है।

विशेषताएँ:

रंग और आकार: मटर की फली आमतौर पर हरे रंग की होती है, लेकिन कई प्रकार के मटर विभिन्न रंगों में आते हैं जैसे कि हरा, पीला, लाल, और काला। इनकी आकार भी विभिन्न होती है, लेकिन आमतौर पर यह छोटे गोल या अंडाकार बीजों की फली होती है।

पौष्टिकता:

मटर में प्रोटीन, फाइबर, विटामिन (विटामिन सी, विटामिन ए, विटामिन के), फोलेट, आयरन, मैग्नीशियम, पोटैशियम,

और जिंक जैसे पौष्टिक तत्व पाए जाते हैं। इन सभी पौष्टिक तत्वों के कारण मटर सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं।

स्वाद और उपयोग:

मटर का स्वाद मीठा होता है और यह विभिन्न प्रकार की सब्जियों, पुलाव, खिचड़ी, दाल, और अन्य पकवानों में उपयोग होते हैं। यह खुबसूरत और स्वादिष्ट व्यंजनों में भी शामिल होते हैं, जैसे कि मटर पनीर, मटर कचौरी, आदि।

खेती:

मटर की खेती सर्दियों में प्रमुखतः की जाती है, क्योंकि इसके पौधे ठंडे मौसम में अच्छे से उगते हैं। इसकी खेती काफी सालाना और द्विवर्षीय दोनों तरीकों से की जा सकती है।

सामाजिक महत्व:

मटर को विभिन्न देशों में महत्वपूर्ण खाद्य स्रोत के रूप में माना जाता है, जैसे कि मटर की सब्जियाँ भारतीय खाद्य परंपरा में अहम भूमिका निभाती हैं। इस प्रकार,

मटर एक महत्वपूर्ण फलीहारी फसल है जिसका उपयोग भोजन और व्यंजनों में किया जाता है और जिसमें पौष्टिकता से भरपूर तत्व पाए जाते हैं।



मटर की फसल में कई प्रकार के कीटाणु और बीमारियाँ हो सकती हैं, जो फसल की प्रभावितता को बढ़ा सकते हैं। यहां कुछ प्रमुख रोगों की संक्षिप्त सूची दी गई है:

मटर की फसल में होने वाले प्रमुख रोगों के लक्षण और उनके रोकथाम के उपाय निम्नलिखित हैं:

1. फसली पत्तियों के समर्थनम:

लक्षण: पत्तियों पर छोटे-छोटे दाने दिखाई देते हैं, जिनमें से कुछ दाने भूरे और कुछ सफेद हो सकते हैं।

रोकथाम के उपाय: समर्थनम की रोकथाम के लिए, फसल के पत्तियों की जाँच नियमित रूप से करें और असुरक्षित पत्तियों को हटा दें। जब बीमारी के लक्षण प्रकट हों, तो खेतीबाड़ी द्वारा सिफारिश किए गए उपायों का पालन करें।

2. मटर का पौधों पर लाल सूजन या प्याज का उत्तक:

लक्षण: पौधों पर लाल सूजन दिख सकती है, और पत्तियाँ या पौधे समर्थनम की स्थिति में आ सकते हैं।

रोकथाम के उपाय: समर्थनम की रोकथाम के लिए, स्वच्छता और सही पौधों की प्रबंधन करें। जिस प्रकार से किसान विज्ञानी या कृषि विशेषज्ञ की सलाह दें, वैसे ही उपायों का पालन करें।

3. बैक्टीरियल ब्लाइट:

लक्षण: पत्तियों पर सफेद दाग दिखाई देते हैं और पत्तियाँ सुख जाती हैं।

रोकथाम के उपाय: समर्थनम की रोकथाम के लिए, स्वच्छता का ध्यान रखें, प्राथमिक बीजों का उपयोग करें, और असुरक्षित पौधों को तुरंत हटा दें।

4. फूलका ब्लाइट:

लक्षण: पत्तियाँ काली हो जाती हैं और पूरे पौधे की मृत्यु हो सकती है।

रोकथाम के उपाय: समर्थनम की रोकथाम के लिए, पौधों की सही प्रबंधन करें, स्वच्छता का ध्यान रखें और असुरक्षित पौधों को हटा दें।

5. रूट नॉड्यूल्स नेमैटोड्स:

लक्षण: पौधों की विकास में अवरोध दिखाई दे सकता है, और पौधे समर्थनम की स्थिति में आ सकते हैं।

रोकथाम के उपाय: फसल के आदर्श दूरी का पालन करें, उचित पौधों का चयन करें, और समर्थनम की स्थिति को संवारने के उपायों का पालन करें।

6. फूलों का पड़ना:

लक्षण: फूल तोड़ या पड़ जाते हैं, जिससे फूलों की संख्या कम हो सकती है।

रोकथाम के उपाय: समर्थनम की सही प्रबंधन करें, स्वच्छता बनाए रखें, और समर्थनम की स्थिति को संवारने के उपायों का पालन करें।

यदि आपके पास मटर की फसल में प्रमुख रोगों की सहायता के लिए किसान विज्ञानी या कृषि विशेषज्ञ है, तो उनसे सलाह लेना भी महत्वपूर्ण हो सकता है।

मटर की फसल में लगने वाले प्रमुख कीटों के लक्षण और उनके रोकथाम के उपाय निम्नलिखित हैं:

1. पोड बोरर:

लक्षण: पोड बोरर की लार्वे बीजों के अंदर गुस जाती हैं और बीजों को खाती हैं, जिससे बीजों की नष्टता होती है।

रोकथाम के उपाय: समय पर बीजों की स्वाच्छता, साफ-सफाई करना, और विशेषज्ञ किसान या कृषि विज्ञानी की सलाह लेना।

2. आफिड्स:

लक्षण: आफिड्स के पानीपर के पत्तियों पर जमा होने से पत्तियाँ कुरकुरी हो जाती हैं और फसल की उत्पादकता प्रभावित हो सकती है।

रोकथाम के उपाय: नेमैटोड्स या खेती की जैविक तकनीकों का प्रयोग करना,

पेस्टिसाइड का प्रयोग करना, और खेती की स्वाच्छता की देखभाल करना।

3. हेलिकोनिया फुलरोसा वायरस:

लक्षण: पत्तियों पर पीले और हलके हरे दाग दिख सकते हैं, जो फसल के विकास को प्रभावित करते हैं।

रोकथाम के उपाय: सफल पौधों का प्रतिदीप्तिकरण, समय पर पौधों की समर्थनम की पत्तियाँ हटा देना, और स्वाच्छता का ध्यान देना।

4. माइजेस:

लक्षण: पत्तियों पर सफेद दाग दिख सकते हैं और उन्हें सुखा सकते हैं, जिससे पौधों की विकास प्रभावित होता है।

रोकथाम के उपाय: खेती की स्वाच्छता और हाइजिन का प्रयोग करना, पेस्टिसाइड का प्रयोग करना, और संक्रिय नियंत्रण उपायों का प्रयोग करना।

5. मटर की बोरर:

लक्षण: पौधों की मृत्यु हो सकती है और सूजन दिख सकती है, जो मुख्य डाल पर होती है।

रोकथाम के उपाय: अच्छे बीजों का प्रयोग करना, खेती की स्वाच्छता की देखभाल करना, और बीमार पौधों को नष्ट करना।

यदि आपके अधिक विस्तृत जानकारी चाहिए, तो स्थानीय कृषि विज्ञानी से सलाह प्राप्त कर सकते हैं।